National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-1, January-June 2026
PP: 212-217
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

गुरु तेग बहादुर जी की कविता और भारतीय साहित्य में उनका योगदान

अरविंदर कौर चुम्बर
सह-प्राध्यापिका
हिंदी, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़

प्रस्तावना :

गुरु तेग बहादुर जी भारतीय इतिहास और अध्यात्म के वह युग पुरुष हैं जिनकी वाणी में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और बलिदान का अद्भुत संगम मिलता है। वे सिक्ख परंपरा के नौवें गुरु थे, जिन्होंने न केवल अपने कर्म से बल्कि अपने काव्य से भी समूचे भारतीय समाज को एक नई दिशा दी। उनका जीवन सत्य, करुणा और साहस का आदर्श उदाहरण है — एक ऐसा संत जिसने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया, और इसी कारण उन्हें "हिंद की चादर" कहा गया।गुरु जी की कविताएँ *श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी* में "महला ९" शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत हैं। इन रचनाओं में गहन आध्यात्मिक चिंतन, अद्वैत दर्शन और लोकभक्ति की सहज भाषा का सुंदर संगम दिखाई देता है। उन्होंने अपने युग की पीड़ा, समाज की विवशता और आत्मा की शाश्वत यात्रा को सरल शब्दों में व्यक्त किया।उनकी वाणी केवल धार्मिक उपदेश नहीं है, बल्कि जीवन-दर्शन का संपूर्ण मार्गदर्शन है। वह व्यक्ति को यह सिखाती है कि सुख-दुःख, मान-अपमान और जन्म-मृत्यु — सभी केवल अस्थायी हैं; सच्चा आनंद ईश्वर के नाम-स्मरण और आत्मबोध में निहित है।साहित्यिक दृष्टि से, गुरु तेग बहादुर जी की भाषा हिंदी, ब्रज, पंजाबी और संस्कृत के शब्दों का मिश्रण है, जिससे उनकी कविता जनसामान्य तक सहज पहुँचती है। उनकी काव्य-भाषा में लोक के निकटता और दर्शन की गहराई, दोनों का अद्भुत संतुलन है।

मुख्य शब्द : वैराग्य – सांसारिक मोह से मुक्ति का भाव, गुरु जी की वाणी का केंद्रीय तत्व,अद्वैत दर्शन – आत्मा और परमात्मा की एकता का सिद्धांत

भूमिका

गुरु तेग बहादुर जी (1621–1675) सिक्ख परंपरा के नौवें गुरु थे, जिनका व्यक्तित्व आध्यात्मिकता, साहस, त्याग और मानवीय करुणा का अद्भुत संगम था। वे गुरु हरगोबिंद सिंह जी के सुपुत्र थे, जिन्होंने आध्यात्मिक सत्ता के साथ-साथ लौकिक सत्ता—"मीरी और पीरी"—के संतुलन का मार्ग दिखाया था। उसी परंपरा में गुरु तेग बहादुर जी ने न केवल धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर किए, बल्कि अपनी वाणी के माध्यम से उस युग की आध्यात्मिक चेतना को भी दिशा दी।

उनकी रचनाएँ*श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी* में संकलित हैं। गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में गूढ़ दर्शन अत्यंत सहज भाषा में प्रकट हुआ है। वे जीवन के स्थायी और अस्थायी पहलुओं का अंतर स्पष्ट करते हैं। उनकी कविता यह सिखाती है कि संसार के सुख-दुःख क्षणभंगुर हैं, परंतु ईश्वर का नाम ही शाश्वत है। उनके काव्य में भक्ति की मधुरता के साथ-साथ ज्ञान की गहराई है, जो उन्हें भारतीय संत परंपरा में विशिष्ट स्थान देती है।

उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर वैराग्य, आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर-भक्ति है। वे जीवन के प्रत्येक अनुभव को आध्यात्मिक साधना में बदलने का संदेश देते हैं। उदाहरण के लिए, *"मन तू जोति सरूपु है आपना मूलु पछाणु"* — इन शब्दों में आत्मा को उसके ईश्वरीय स्वरूप की पहचान कराई गई है। गुरु जी मानते हैं कि जब मनुष्य अपने भीतर की ज्योति को पहचान लेता है, तब वह बाहरी मोह-माया से मुक्त होकर परम आनंद की स्थिति में पहुँचता है।ऐसे समय में जब देश मुग़ल शासन की धार्मिक कट्टरता से पीड़ित था, गुरु तेग बहादुर जी का संदेश मानवता के सार्वभौमिक मूल्य पर आधारित था। वे सभी धर्मों की समानता में विश्वास करते थे। उनकी वाणी किसी एक पंथ की सीमाओं में नहीं बँधी, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए थी। इस दृष्टि से उनकी कविताएँ भारतीय साहित्य में धर्मनिरपेक्षता, करुणा और एकता की जीवंत व्याख्या प्रस्तुत करती हैं।गुरु जी की भाषा साधारण जन की समझ में आने वाली थी। उन्होंने दार्शनिक सच्चाइयों को लोकभाषा में गढ़कर यह सिद्ध किया कि ज्ञान केवल विद्वानों की संपत्ति नहीं, बल्कि हर व्यक्ति का अधिकार है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ आज भी जनमानस में जीवित हैं और भारतीय अध्यात्म के शिखर पर प्रतिष्ठित हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

गुरु तेग बहादुर जी की कविताओं का स्वरूप

गुरु तेग बहादुर जी की कविता भारतीय भक्ति परंपरा की उस धारा का प्रतिनिधित्व करती है जो मनुष्य को भीतर से जागृत करती है। उनकी वाणी *श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी* में "महला ९" के नाम से संकलित है। ये रचनाएँ विभिन्न रागों में रची गई हैं — जैसे *राग गौड़ी, राग सोरठ, राग धनासरी*आदि। उनकी कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे गहराई में उतरती हैं, परंतु भाषा और भाव इतने सरल हैं कि सामान्य व्यक्ति भी उनमें आत्मानुभूति कर सकता है।उनकी कविता में "नाम-स्मरण" की महिमा सर्वाधिक प्रमुख है। वे बार-बार कहते हैं कि संसार के सभी सुख और संपत्ति नश्वर हैं, परंतु ईश्वर का नाम ही वह स्थायी तत्व है जो आत्मा को अमरत्व प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, वे कहते हैं:

जो दीसै सो सगल बिनासै जियु बादर की छायी।।

जन नानक जगु जानियु मिथिया रहियो राम सरनायी।।२।। (अंग:२१९)

इस पंक्ति में संसार के सभी भौतिक उपभोगों की सीमितता का बोध कराया गया है। मनुष्य के जीवन का सार केवल "राम नाम" में निहित है। उनकी कविता सांसारिक मोह-माया के प्रति एक सूक्ष्म आलोचना प्रस्तुत करती है, परंतु उसका स्वर नकारात्मक नहीं बल्कि जागृति का है। वे मोह को त्यागने की प्रेरणा देते हैं ताकि आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सके।गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में "वैराग्य" की भावना प्रमुख है। परंतु यह वैराग्य पलायनवादी नहीं है; बल्कि कर्मयोग के साथ जुड़ा हुआ है। उनकी कविता व्यक्ति को संसार में रहते हुए भी निर्विकार बने रहने की प्रेरणा देती है। जैसे वे कहते हैं:

जो नरु दुःख महि दुखु नहीं मानै , सुख सनेहु अरु भै नही जाके कंचन माटी मानै।।१।। रहाउ ।।

यहाँ स्थिर चित्त और समभाव की साधना का संदेश है। दुःख-सुख, मान-अपमान में जो व्यक्ति समान भाव रखता है, वही सच्चा मुक्त जीव है।उनकी कविताओं में "आत्मा" और "परमात्मा" का संबंध अद्वैत भाव से प्रस्तुत है। वे उपनिषदों के इस विचार को लोकभाषा में प्रकट करते हैं कि "आत्मा ही परमात्मा है।" इस प्रकार, उनकी कविता भारतीय दर्शन की परंपरा और लोकभक्ति के बीच एक सेतु का कार्य करती है।गुरु तेग बहादुर जी की रचनाएँ न केवल धार्मिक उपदेश हैं, बल्कि वे जीवन-दर्शन हैं। उनमें संसार का प्रत्येक अनुभव एक सीख बन जाता है — माया से सावधानी, नाम में शरण, और आत्मबोध का मार्ग। यही कारण है कि उनकी कविताएँ आज भी न केवल सिक्ख परंपरा, बल्कि समस्त भारतीय साहित्य का अभिन्न अंग मानी जाती हैं।

भारतीय साहित्य में गुरु तेग बहादुर जी का योगदान

गुरु तेग बहादुर जी का भारतीय साहित्य में योगदान केवल एक कवि के रूप में नहीं, बल्कि एक दार्शनिक संत और समाज-सुधारक कविके रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्रहवीं शताब्दी का भारत राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक अस्थिरता से गुजर रहा था। मुग़ल शासन की धार्मिक नीतियों के कारण भय और अन्याय का वातावरण था। ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी ने जनमानस में आत्मबल, धैर्य और आस्था का संचार किया। उन्होंने यह सिखाया कि सच्चा धर्म वह है जोमानवता की रक्षा करे, न कि दूसरों पर अपने विश्वास को थोपे। उनका जीवन स्वयं इस विचार का प्रमाण है — जब कश्मीरी पंडितों ने अपनी धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सहायता मांगी, तब गुरु जी ने अपने प्राण अर्पण कर दिए। इस बलिदान ने उन्हें "हिंद की चादर" की उपाधि दिलाई।

साहित्यिक दृष्टि से देखें तो गुरु जी की भाषा सरल, मार्मिक और भावप्रधान है। उन्होंने हिंदी, ब्रज, पंजाबी और संस्कृत शब्दों के मिश्रण से एक ऐसी शैली विकसित की जो लोक और शास्त्र दोनों को जोड़ती है। यह उनकी महान उपलब्धि थी, क्योंकि इससे साहित्य जनसामान्य तक पहुँचा। उनकी कविताएँ "अनुभूति की भाषा" हैं — उनमें कोई अलंकारिक आडंबर नहीं, केवल सच्चाई की अनुभूति है।उनकी वाणी का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है — *समानता का संदेश।* उस समय जब जाति और धर्म के नाम पर समाज विभाजित था, गुरु तेग बहादुर जी ने कहा कि हर व्यक्ति ईश्वर का अंश है। उनकी यह दृष्टि तुलसीदास, कबीर, रविदास और नानक की परंपरा को आगे बढ़ाती है। इस प्रकार वे भक्ति आंदोलन की उत्तर भारतीय धारा के एक सशक्त सूत्रधार बनते हैं।

उनकी रचनाएँ साहित्य में "आध्यात्मिक नायकत्व" की परंपरा स्थापित करती हैं। उनके जीवन और काव्य दोनों मेंसत्य और त्यागका मेल है। भारतीय साहित्य में ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं जहाँ कवि ने अपने सिद्धांतों के लिए जीवन अर्पित कर दिया हो। इसीलिए उनका योगदान केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्म में भी अमर है।उनकी वाणी का प्रभाव बाद के सिख गुरुओं, हिंदी कवियों और दर्शनशास्त्रियों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने सिख धर्म की आध्यात्मिक चेतना को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी, और इस प्रकार भारत के सांस्कृतिक इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

भारतीय दर्शन के संदर्भ में गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन

गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन भारतीय आध्यात्मिक चिंतन की गहरी परंपरा में निहित है। उनका विचार-संसार अद्वैत वेदांत, भक्ति आंदोलन और सिख दर्शन — इन तीनों का अद्भुत संगम है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के उन मूल तत्वों को आत्मसात किया, जो आत्मा की स्वतंत्रता, ईश्वर के साथ एकत्व और मानवता की समानता पर आधारित हैं।उनका मूल संदेश था — "मनुष्य और ईश्वर के बीच कोई दूरी नहीं, केवल अज्ञान का पर्दा है।"यही विचार उपनिषदों और अद्वैत वेदांत की आत्मा है, जिसे गुरु जी ने सहज और लोकभाषा में प्रस्तुत किया। वे कहते हैं —

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥

कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१ ॥रहाउ॥ (अंग:११८७)

यह पंक्ति उनके दर्शन की आधारशिला है। यहाँ "जोति सरूप" आत्मा की दिव्यता और ईश्वर से उसकी एकता का प्रतीक है। गुरु जी बताते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर वही ज्योति है, जो समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त है। जब मनुष्य अपने मूल स्वरूप — आत्मा — को पहचान लेता है, तभी उसे मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति होती है।

उनका दर्शन "ज्ञान" और "भक्ति" दोनों को एक साथ जोड़ता है। वेदांत जहाँ ज्ञान के माध्यम से आत्मा की पहचान की बात करता है, वहीं भक्ति परंपरा प्रेम और समर्पण से उसी लक्ष्य तक पहुँचती है। गुरु तेग बहादुर जी के यहाँ दोनों मार्ग एक हो जाते हैं — वे कहते हैं कि*ईश्वर को पाने के लिए केवल तर्क या भावना नहीं, बल्कि सच्चा अनुभव आवश्यक है।*उन्होंनेउपनिषदों के अमूर्त ज्ञान को लोकभाषा में जीवंत कर दिया।वे कठिन दार्शनिक विचारों को सहज, सुलभ और भावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनकी वाणी में न तो जटिल तर्क हैं, न दार्शनिक प्रदर्शन, बल्कि अनुभव की गहराई है। उनका लक्ष्य था — "ज्ञान का लोक में अवतरण।"

उनकी वाणी यह भी सिखाती है कि सच्चा धर्म केवल बाहरी अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन में है। वे कहते हैं कि जो व्यक्ति भीतर की ज्योति को पहचान लेता है, उसे किसी बाहरी साधन या आडंबर की आवश्यकता नहीं रहती। यही विचार भारतीय दर्शन के "अंतर्यामी ब्रह्म" की अवधारणा से मेल खाता है।गुरु जी का दर्शन जीवन को न तो भोगवादी मानता है, न संन्यास-प्रधान। वे संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं — संसार में रहकर भी ईश्वर से जुड़ना। वे कहते हैं कि सच्चा योग वही है जो कर्म करते हुए भी मोह से रहित हो।उनका यह समन्वित दृष्टिकोण भारतीय दर्शन की उस परंपरा को जीवंत करता है जिसमें*ज्ञान, भक्ति और कर्म* — तीनों एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं।

गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन भारतीय अध्यात्म की उस गहराई को प्रतिध्वनित करता है जिसमें भक्ति और ज्ञान का संगम है। उनकी वाणी में अद्वैत वेदांत, भक्ति परंपरा और सिख धर्म की व्यावहारिक मानवतावादी चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। वे यह सिखाते हैं कि परमात्मा कोई बाहरी सत्ता नहीं है, बल्कि हर जीव के भीतर निवास करता है। मनुष्य का लक्ष्य अपने भीतर की उस दिव्य चेतना को पहचानना है — यही आत्मज्ञान और मुक्ति का मार्ग है।उनकी यह दार्शनिक दृष्टि निम्न पंक्तियों में स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है —

यहाँ गुरु जी आत्मा की दिव्यता और परमात्मा से उसकी एकता का संदेश देते हैं। यह वही विचार है जो उपनिषदों में "तत्त्वमसि" या "अहं ब्रह्मास्मि" के रूप में प्रकट होता है। इस प्रकार गुरु तेग बहादुर जी भारतीय दर्शन की उस परंपरा को जनभाषा में उतारते हैं, जिससे सामान्य व्यक्ति भी आत्मबोध की अनुभूति कर सके।

उनके दर्शन में "वैराग्य" का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, परंतु यह वैराग्य संन्यास नहीं, बल्किसक्रिय वैराग्यहै। वे संसार को त्यागने की बात नहीं करते, बल्कि संसार में रहकर आसक्ति से मुक्त रहने का मार्ग बताते हैं। यह दृष्टिकोण भगवद्गीता के "निष्काम कर्मयोग" से मेल खाता है। वे कहते हैं कि जीवन में सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान आते-जाते रहते हैं, परंतु आत्मा शाश्वत है। जो इस सत्य को समझ लेता है, वही मुक्त होता है।

अतः गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन न केवल सिख परंपरा की आत्मा है, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय चिंतन का सार भी है। उन्होंने अद्वैत के "ब्रह्म" को भक्ति के "हरि" और सिख दर्शन के "वाहेगुरु" में एकाकार कर दिया। यही कारण है कि उनकी वाणी आज भी भारतीय दर्शन की "जीवित व्याख्या" कही जा सकती है — सरल, सार्वभौमिक और मुक्तिदायक।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

काव्य की आध्यात्मिक गहराई

गुरु तेग बहादुर जी की कविताएँ आध्यात्मिक अनुभूति की गहराई से भरी हैं। उनकी वाणी में आत्मा की तड़प, वैराग्य की शांति और ईश्वर के साथ एकत्व की खोज दिखाई देती है। उन्होंने अपने शब्दों में वह अनुभूति प्रकट की है जो केवल साधना और आत्मबोध से प्राप्त होती है।

उनकी कविता किसी दार्शनिक व्याख्या से अधिक "अनुभूति का स्वर" है। वे किसी सिद्धांत को नहीं, बल्कि आत्मानुभव को व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं—

"सगल पदारथ नाम बिनु नाहि ॥ राम नामु जानि मनु माहि ॥"(अंग २१९)

उनकी कविता की आध्यात्मिक गहराई इस बात में है कि वह पाठक को "भीतर की यात्रा" के लिए प्रेरित करती है। वे बाहर के देवता की नहीं, भीतर की ज्योति की पूजा करने की बात करते हैं। उनका आत्मदर्शन किसी धर्म या पंथ तक सीमित नहीं, बल्कि सार्वभौमिक है।गुरु तेग बहादुर जी की कविता में ईश्वर कोई बाहरी सत्ता नहीं, बल्कि आत्मा की आंतरिक ज्योति है। उनकी वाणी व्यक्ति को बाहर की अंधेरी दुनिया से हटाकर भीतर के प्रकाश की ओर ले जाती है। यही उनकी कविता की सबसे बड़ी गहराई है — वह शांति नहीं, बल्कि जागृति की ओर ले जाती है।

गुरु तेग बहादुर जी का समाज-संदेश

गुरु तेग बहादुर जी का समाज-संदेश केवल धार्मिक नहीं, बल्कि मानवीय और नैतिक मूल्यों पर आधारित है। उनकी वाणी ने 17वीं शताब्दी के उस भारत को नई दिशा दी जो धार्मिक असहिष्णुता, भय और अन्याय से जूझ रहा था। उन्होंने यह सिखाया कि सच्चा धर्म वह है जोमानवता की रक्षा करे, न कि विभाजन फैलाए।गुरु जी ने यह संदेश दिया कि समाज का उत्थान केवल तब संभव है जब व्यक्ति स्वयं के भीतर से लोभ, मोह, और क्रोध को समाप्त करे। उनके अनुसार समाज की हर समस्या का समाधान व्यक्ति के चरित्र निर्माण में है। वे कहते हैं—

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१ ॥रहाउ॥

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥

झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१ ॥

अजहूकछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥

कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२ ॥१ ॥

(अंग ७२६)

यह पंक्ति समाज के लिए साहस और समानता का संदेश देती है — न किसी को भय दो, न किसी से भय मानो। यही सच्चा धर्म है।उन्होंने समाज को यह सिखाया कि न्याय, करुणा और सेवा ही मानव जीवन का आधार होना चाहिए। उनके अनुसार, यदि व्यक्ति "नाम-स्मरण" में लीन होकर कर्म करे, तो वह दूसरों की भलाई में ही ईश्वर की सेवा करता है।गुरु जी का समाज-संदेश यह भी था कि धर्म को कभी राजनीति या सत्ता का उपकरण नहीं बनाना चाहिए। धर्म का कार्य मनुष्य को जोड़ना है, बाँटना नहीं। उन्होंने लोगों से कहा कि धर्म का सार "समानता और प्रेम" में है, न कि जाति या परंपरा में।उनकी वाणी में एक क्रांतिकारी चेतना है। वे समाज को भय से मुक्त करते हैं और उसे आत्मबल देते हैं। उनके संदेश में साहस है, किंतु वह हिंसा नहीं सिखाता। वे कहते हैं कि अन्याय का विरोध करो, परंतु ईर्ष्या और घृणा से नहीं, सत्य और संयम से।

गुरु जी का समाज-संदेश आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक युग में जब समाज पुनः विभाजन और असहिष्णुता के दौर से गुजर रहा है, उनकी वाणी "मानवता की एकता" का दीपक जलाती है। वे सिखाते हैं कि धर्म की सच्ची पहचान यह नहीं कि आप किस देवता को पूजते हैं, बल्कि यह है कि आप अपने साथी मानव से कैसा व्यवहार करते हैं।इस प्रकार गुरु तेग बहादुर जी का समाज-संदेश एक सार्वभौमिक आदर्श है — जो व्यक्ति को निडर, समाज को एकजुट और मानवता को सशक्त बनाता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

साहित्यिक दृष्टि से मूल्यांकन

गुरु तेग बहादुर जी का साहित्यिक मूल्यांकन करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि वे केवल कवि नहीं, बल्कि "काव्य-द्रष्टा" थे। उनकी कविताएँ सिख धर्मग्रंथ का भाग होते हुए भी भारतीय साहित्य की सार्वभौमिक परंपरा का हिस्सा हैं।उनकी भाषा लोकभाषा पर आधारित है, जिसमें हिंदी, ब्रज और पंजाबी के शब्दों का अद्‌भुत मिश्रण मिलता है। यह भाषा न केवल जनसुलभ है, बल्कि भावनात्मक रूप से अत्यंत प्रभावशाली भी है।

साहित्यिक दृष्टि से उनकी कविताओं में संक्षिप्तता और गूढ़ता का अनोखा संगम है। एक छोटी-सी पंक्ति गहरे दर्शन को प्रकट करती है। उदाहरण के लिए—

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥

सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१ ॥रहाउ॥ (अंग ६३३)

यह पंक्ति व्यक्ति को समभाव की शिक्षा देती है — जो साहित्यिक सौंदर्य और दार्शनिक गहराई दोनों रखती है।उनकी वाणी का सौंदर्य उसकी सादगी में है। वहाँ अलंकार या छंद का प्रदर्शन नहीं, बल्कि भावना की गहराई है। उनका काव्य उपदेश नहीं, अनुभव की अभिव्यक्ति है।

सिख काव्य परंपरा में गुरु तेग बहादुर जी की भूमिका विशेष है क्योंकि उन्होंने भक्ति-काव्य को "कर्म" से जोड़ा। जहाँ पहले संत कवि ईश्वर की उपासना में तल्लीन थे, वहीं गुरु जी ने "भक्ति में साहस" जोड़ा — यही उनका मौलिक योगदान है। साहित्यिक दृष्टि से उनकी कविताएँ*अभिव्यक्ति की सरलता*और*विचार की गहराई*दोनों का आदर्श उदाहरण हैं। उन्होंने शब्दों को आध्यात्मिक ऊर्जा में बदल दिया। भारतीय साहित्य के इतिहास में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी "सत्य, वैराग्य और करुणा" की त्रयी के रूप में अमर है। उनका काव्य हमें यह सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन या सौंदर्य की वस्तु नहीं, बल्कि आत्मा की जागृति का साधन है।

गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की समसामयिक प्रासंगिकता

आज के युग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। आधुनिक समाज भौतिक प्रगति के बावजूद मानसिक तनाव, भय, हिंसा और विभाजन से जूझ रहा है। ऐसे समय में गुरु जी की कविताएँ "आंतरिक शांति" और "मानव एकता" का प्रकाशस्तंभ हैं।

वे सिखाते हैं कि जीवन में भय और मोह से मुक्त होना आवश्यक है। उनका प्रसिद्ध शबद —

"भै काहू को देत नहिं, न भै मानत आन।"

उनकी वाणी यह बताती है कि धर्म का अर्थ केवल पूजा नहीं, बल्कि मानवता के प्रति जिम्मेदारी है। आधुनिक समाज में जब धर्म का उपयोग राजनीति और विभाजन के लिए हो रहा है, गुरु जी की वाणी याद दिलाती है कि सच्चा धर्म प्रेम, करुणा और न्याय में निहित है।

वे यह भी सिखाते हैं कि आध्यात्मिकता केवल सन्यासियों की नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता है। जब मनुष्य अपने भीतर की शांति पाता है, तभी समाज में स्थायी शांति संभव होती है।

गुरु जी का "नाम-स्मरण" आज के मानसिक तनाव और भटकाव से मुक्ति का मार्ग बन सकता है। वे कहते हैं कि जो व्यक्ति हर परिस्थिति में स्थिर रहता है, वही ज्ञानी है। यह शिक्षा आज के जीवन में मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-संतुलन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

उनकी वाणी पर्यावरण, समानता, स्त्री-सम्मान और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रेरणा देती है। वे हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल भोग नहीं, बल्कि सेवा और साधना है।

अतः गुरु तेग बहादुर जी की वाणी आज के वैश्विक युग में भी शांति, समानता और नैतिकता की नींव है — एक ऐसी "जीवंत आवाज़" जो समय से परे है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

निष्कर्ष

गुरु तेग बहादुर जी भारतीय इतिहास और साहित्य के उन दुर्लभ व्यक्तित्वों में से हैं, जिन्होंने कविता, दर्शन और कर्म—तीनों को एक सूत्र में बाँधा । उनकी वाणी मानव जीवन के उच्चतम मूल्यों की प्रतीक है। वे केवल धार्मिक गुरु नहीं, बल्कि एक ऐसे कवि-द्रष्टा हैं जिन्होंने शब्दों के माध्यम से आत्मा की मुक्ति का मार्ग दिखाया।उनकी कविताएँ हमें यह सिखाती हैं कि जीवन क्षणभंगुर है और माया का आकर्षण केवल भ्रम है। सच्चा सुख ईश्वर के नाम में, सेवा में और समभाव में है। यह संदेश केवल धार्मिक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भी है — क्योंकि यह व्यक्ति को भीतर से स्थिर और संतुलित बनाता है। उनकी वाणी में ऐसी आंतरिक शक्ति है जो भय को समाप्त करती है और आत्मविश्वास को जागृत करती है।गुरु तेग बहादुर जी का साहित्य हमें यह भी सिखाता है कि धर्म का असली स्वरूप प्रेम, करुणा और सहिष्णुता में है। उन्होंने किसी भी धर्म को श्रेष्ठ या हीन नहीं माना। उनकी दृष्टि में हर प्राणी में वही परमात्मा वास करता है। यह विचार भारत की सांस्कृतिक एकता की नींव को और सुदृढ़ करता है।उनका बलिदान भारतीय इतिहास का स्वर्ण अध्याय है — एक ऐसा त्याग जो केवल धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि मानवता के सिद्धांतों की रक्षा के लिए हुआ। यह अद्वितीय घटना साहित्य के लिए भी प्रेरणा है, क्योंकि उसने यह दिखाया कि कवि के शब्द केवल कागज़ पर नहीं, बल्कि कर्म में भी जीवित रह सकते हैं।आज के युग में, जब मानवता पुनः विभाजनों से जूझ रही है, गुरु तेग बहादुर जी की वाणी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठी है। उनकी कविता हमें आत्म-चिंतन, सह-अस्तित्व और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

“भै काहू को देत नहिं, न भै मानत आन ॥

कहु नानक सुनु रे मना, ज्ञानी ताहु बखान ॥”

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अंग १४२७)

इस पंक्ति में उनके जीवन-दर्शन का सार निहित है — भय न देना, भय न मानना। यही सच्ची स्वतंत्रता और ज्ञान की परिभाषा है।अतः कहा जा सकता है कि गुरु तेग बहादुर जी का योगदान केवल सिख इतिहास का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। उनकी कविताएँ समय, भाषा और पंथ की सीमाओं से परे हैं — वे “मानवता की कविता” हैं। इस दृष्टि से वे संत कवियों की उस परंपरा के अंतिम महान स्तंभ हैं जिसने भारतीय साहित्य को आत्मा की आवाज़ दी।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी
2. सिंह, डॉ. तेज — *गुरु तेग बहादुर: जीवन और दर्शन*, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2003।
3. सिंह, डॉ. हरभजन — *सिख काव्य परंपरा और दर्शन*, लुधियाना: पंजाबी विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1998।
4. सिंह, बलदेव — *गुरु तेग बहादुर: हिंद की चादर*, अमृतसर: गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, 2012।
5. खालसा, जसविंदर — *सिख संत परंपरा और हिंदी काव्य*, वाराणसी: भारती प्रकाशन, 2010।

© Copyright @ Authors